एग्री मैगज़ीन
(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 08 (अगस्त, 2026)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

मूँगफली की उन्नत खेती

*संदीप कुमार चौधरी[1], अरविन्द सिंह तेतरवाल[2], सुमित्रा देवी बम्बोरिया[3] एवं बाबू लाल फगोड़िया[4]
[1]विषय वस्तु विशेषज्ञ, कृषि विज्ञान केंद्र, टोंक, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान, भारत
[2]विषय वस्तु विशेषज्ञ, कृषि विज्ञान केंद्र, पाली, राजस्थान, भारत
[3]सहायक आचार्य, श्री कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविधालय, जोबनेर, राजस्थान, भारत
[4]विषय वस्तु विशेषज्ञ, कृषि विज्ञान केंद्र, दिल्ली, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: sandeepkuri2018@gmail.com

मूँगफली एक खरीफ की प्रमुख तिलहन फसल है। मूँगफली प्रोटीन का एक सस्ता स्रोत हैं। इसमें प्रोटीन की मात्रा मांस की तुलना में 1.5 गुना, अण्डों से 2.5 गुना एवं फलों से 8 गुना अधिक होती है और इसमें 50% वसा (फैट) होता है। 100 ग्राम कच्ची मूँगफली में 1 लीटर दूध के बराबर प्रोटीन होता है। मूँगफली पाचन शक्ति बढ़ाने में भी कारगर है।

भूमि का चुनाव: मूंगफली विभिन प्रकार की मिट्टियों में उगाई जा सकती है लकिन रेतीली दोमट एवम् भारी मटियार दोमट भूमि में अलग –अलग जाति की मूंगफली बोई जाती है इसके लिए खेत में अच्छा जल निकास हो और प्रचुर मात्रा में कैल्सियम और जीवांश पदार्थ मोजूद हो मूंगफली के लिए उपयुक्त रहती है

खेत की तेयारी: मूंगफली बोने से पहले खेत की 2-3 अच्छी जुताई करके खेत को तेयार कर लेना चाहिए ताकि भूमि भुरभुरी हो जाये उसके बाद पाटा चलाकर बुवाई के लिए तेयार केरे

उन्नत किस्में

उन्नत किस्में	परिपक्वता अवधि (दिन)	औसतउपज (क्विं.)	विशेषताएँ
गिरनार 2	125-130	25-30	तेल कि मात्रा 49 प्रतिशत होती है
गिरनार 5	110-115	25-30	तेल कि मात्रा 49 प्रतिशत होती है
आर.जी.510	126-130	26-32	यह किस्म गलगट, तना गलन व टिक्का, विषाणु गुच्छा आदि के प्रति रोगरोधी है
आर.जी.559-3	125-128	28-34	यह किस्म निर्यात के लिए उपयुक्त है इसका दाना मोटा तथा बादामी रंग का होता है
आर.जी. 638	122	35-40	इस किस्म में तेल कि मात्रा 49 प्रतिशत होती है यह किस्म मुख्य रोगों व कीटो के प्रति काफी हद तक प्रतिरोधीहोती है

बुवाई का समय-मूंगफली की बुवाई जून के प्रथम सप्ताह से द्वितीय सप्ताह तक करे 1

बीज दर व बोने का तरीका-मूंगफली के लिएझुमका किस्म 100 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर विस्तारी एवं अर्धविस्तारी किस्म 80 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर उपयुक्त होता है विस्तारी किस्म में कतार से कतार की दूरी 40-45से.मी. व पौधों से पौधों की दूरी 10-15 से.मी. रेखे तथा झुमका किस्म में कतार से कतार की दूरी 30से.मी. व पौधों से पौधों की दूरी 10 से.मी. रेखे

बीजोपचार- वीटावेक्स पावर 2-3 ग्राम प्रति किलो गुली इमिडाक्लोप्रिड 600 एफ.एस. 5-6 मि.ली. प्रति किलो गुली व एन.पी.के. कन्सोर्टिया 10 मि.ली. प्रति किलो गुली की दर से उपचारित करना चाहिए।

खाद एवं उर्वरक-बुवाई से पहले 8-10 टन गोबर की खाद प्रति हैक्टेयर की दर से जुताई कर के अच्छी तरह खेत में मिला देवे 1 मूंगफली की फसल में 20 किलोग्राम नत्रजन, 50 किलोग्राम फास्फोरस व 40 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टेयर की दर से देवें। कम वर्षा वाले शेत्रों में उर्वरक की मात्रा आधी कर देवे

बोरोन की कमी वाली भूमि में 10 किलो बोरेक्स (सोडियम बोरेट) प्रति हैक्टेयर की दर से बुवाई से पूर्व खेत ऊर कर देवे l
जिंक की कमी वाली भूमि में 25 किलो जिंक सल्फेट प्रति हैक्टेयर की दर से बुवाई से पूर्व खेत में मिला देवे l

खरपतवार नियंत्रण- खेत में से खरपतवार निकालते रहना चाहिए तथा 30दिन की फसल होने तक निराई गुड़ाई पूरी कर लीजिये बुवाई के एक माह बाद झुमका किस्म के पोधों की जड़ो पर मिट्टी चढाये क्योकि जमीन में मूंगफली की सुईया बनना शुरू होने के बाद गुडाई बिल्कुल न करे जहाँ निराई गुडाई करना मुश्किल हो वहा पर फसल में खरपतवार नियंत्रण हेतु जुताई से पूर्व एक किलो फ्लूक्लोरेलिन (सक्रिय तत्व) को 600-800 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।ध्यान रहे कीखरपतवारनाशी खेत में जुताई के समय अच्छी तरह मिल जाये । यदि बुवाई के तुरंत बाद आक्सीफलूरोफेन 150 मिली लीटर प्रति हैक्टेयरकी दर से छिड़काव करें।

सिंचाई प्रबन्धन-खरीफ मोसम की फसल प्राय: वर्षा पर निर्भर रहती है यदि वर्षा न हो तो पहली सिंचाई बुवाई के करीब 25 से 30 दिन बाद, दूसरी सिंचाई अगस्त के प्रथम पखवाड़े में आने पर, सुईयां बनने तथा फली के बनने के समय भूमि में नमीं का होना आवश्यक है।

पादप संरक्षण- दीमक-दीमक का प्रकोप फसल की प्रारम्भिक अवस्था से फसल पकने तक होता है। ये मूसला जड़ को खाकर परिपक्क़व होने से पूर्व ही पौधे को सुखा देती है। खासतौर पर रेतीली जमीनो व सूखो क्षेत्रों में ज्यादा नुकसान करती है। और फली के अंदर गिरी के स्थान पर मिट्टी भर जाती है इसके नियंत्रण हेतु आस-पास दीमक के घर (टमेटोररयम) व रानी दीमक को नष्ट करें। थायोमेथोक्जाम 75 एस.जी. 125 मिली या फिप्रोनिल 5 एस.सी. 450 मिली लीटर प्रति हैक्टेयर की दर से प्रयोग करें।

सफेद लट-इस कीट की प्रौढ़ (बीटल) एवम् लट दोनो ही अवस्था नुकसान पहुचाती है। जबकि पेड़ पौधो में प्रौढ़ बीटल द्वारा नुकसान पहुचाया जाता है। मानसून या इससे पूर्व भारी वर्षा होने पर प्रौढ़ कीट जमीन से निकल कर परपोषी पेड़ जैसे नीम खेजडी बेर अमरूद आदि पर बैठते हैं।और इन पड़ो के निचे मिट्टी में प्रौढ़ बीटल अंड्डे देते है और अंडो से लार्वा \ लट निकलती है और फसल की जड़ो को खा जाती है और पोधा सुख जाता है इस कीट के नियंत्रण हेतु मूंगफली बीज को क्लोथिनिडीन 50 डब्ल्यू डी जी 2 ग्राम प्रति किलो अथवा इमिडाक्लोप्रिड 600 एफ. एस. 6 एम.एल. प्रति किलो बीज की दर से बीजोपचार कर बुवाई करें। खड़ी फसल में प्रकोप होने पर 500 मिली लीटर इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. प्रति हैक्टेयर की दर से सिंचाई के साथ देवें। जैविक नियंत्रण के लिए मेटाराजियम एनिसोपीली 2.5 किलोग्राम के 80-100 किलोग्राम गोबर की खाद साथ मिलाकर प्रति हैक्टेयर में बुवाई पूर्व प्रयोग करें।

मोयला-मोयला कीट नई पत्तियों एव कोपलों एव कभी कभी फूलों पर इक्कठा होकर रस चूसते हैं। अधिक प्रकोप होने पर पत्तीया पीली पड़ कर मुड़ जाती है। इसके नियंत्रण हेतु पीले रंग के चिपचिपे ट्रैप 30-40 प्रति हैक्टेयर के हिसाब से लगायें। कीट दिखाई देते ही 5 प्रतिशत नीम के अर्क का छिडकाव करें। मैलाथियान 5 प्रतिशत चूर्ण 25 किलो प्रति हैक्टेयर की दर से भूरकाव करें या मिथाईल डिमेटीन 25 ई सी एक लीटर दवा का पानी में घोल बनाकर प्रयोग करें।

टिक्का-मूंगफली में टिक्का रोग फसल उगने के 40 दिन बाद दिखाई देता है इस रोग द्वारा बने धब्बे रुपरेखा में गोलाकार से अनियमित आकार के एवों इनके चारो ओर पीला परिवेश होता है तथा इनका आकार 1-10 मि.मी. होता है। इन धब्बों की ऊपरी सतह वाले ऊतक क्षेयी क्षेत्र लाल भूरे से काले, जबकि निचली सतह के क्षेत्र हल्के भूरे रंग के होते है।इस रोग के लक्षण दिखाई देते ही टेबुकोनाजॉल 25 प्रतिशत डब्लू.जी. या पोपीकोनाजॉल 25 ई.सी. का 1 मि.ली. या मैंकोजेब 2 ग्राम प्रति लीटर पानी घोल का छिड़काव करें।

कॉलर रोट रोग-यह भूमि एव बीज जनित रोग है। इस रोग में अंकुरण से पहले बीजों व जड़ों का गलना प्रमुख है। इस रोग से ग्रसित पौधों के तनों पर गोल हल्के भूरे धब्बे पड़ जाते हैं। बाद में ये धब्बे मुलायम हो जाते हैं, जिससे पौधे सड़कर गिरने लगते हैं। संक्रमित पौधों पर काले रंग की फफून्द दिखाई देती है। फलस्वरूप खेत में पौधों की संख्या बहुत कम रह जाती है।इसके नियंत्रण हेतु बुवाई से 7-8 दिन पहले एक किलोग्राम ट्राइकोडर्मा प्रति बीघा की दर से 12-15 किलो गोबर की खाद में मिलाकर छाया में रख दें एवं बुवाई के समय भूमि में मिला दें। एवं खड़ी फसल में प्रोपिकोनाजोल 25 प्रतिशत ई. सी. या हेक्जाकोनोजोल 5प्रतिशत ई. सी. 1.5 मिली.प्रति लीटर पानी का मृदा निक्षेप अथवा सिचाई पानी के साथ 200 मि लि प्रतिबिघा कि दर से देवे।

किट्टरोग/रस्ट- रोग के लक्षण पत्तियों की निचली सतह पर ऊतकक्षयी धब्बों के रुप में दिखाई पडते हैं। पत्तियों के प्रभावित भाग की बाह्य त्वचा फट जाती है। ये धब्बे पर्णवृन्त एव वायवीय भाग पर भी देखे जा सकते हैं। रोग उग्र होने पर पत्तियां झुलसकर गिर जाती हैं। दाने चपटे हो जाते हैं। इसके नियंत्रण हेतु खड़ी फसल में बीमारी के प्रारम्भिक लक्षण दिखाई देते ही डाइफनकोनाजोल 25 ई सी 100 मि.ली. या हैकजाकोनाजोल 5 ई.सी. 1500 मिली प्रति हेक्टेयर की दर से घोल बनाकर 15 दिनों के अंतराल पर दो छिडकाव करें।

पीलिया रोग– इससे बचने के लिए 0.5 प्रतिशत हरा कसीस l फेरस सल्फेट या 0.1 प्रतिशत गंधक के अम्ल का घोल बनाकर फूल आने से पहले और एक बार फूल आने के बाद दूसरी बार छिड़काव करे ।

औसत उपज-मूंगफली की उपज 20-25 क्विंटल प्रति हैक्टेयर होती है मूंगफली को अच्छी तरह सुखाकर ही भण्डारण में रखे किसी भी हालत में मूंगफली के दानो में नमी की मात्रा 8-10 प्रतिशत से अधिक नही होनी चाहिए